व्यक्तित्व के सिद्धान्त
(THEORIES OF PERSONALITY)

द्वारा

डॉ0 श्रवण कुमार

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (बी0एड0)

नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),

प्रयागराज

Dr. Sharwan Kumar, Assistant Professor, N.G.B.(Deemed to be University)., Prayagraj

व्यक्तित्व के सिद्धान्त (Theories of Personality)

Theories of Freud/Erickson/Eysenck/ Rogers/Cattell/Abraham Maslow

व्यक्तित्व की प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के सम्बन्ध में अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। व्यक्तित्व के सिद्धान्तों में मुख्य विभेद व्यक्तित्व के सम्बन्ध में बनायी गयी मान्यताओं में अन्तर के कारण है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने–अपने पृष्ठभूमिक ज्ञान (Backgroundd knowledge) के अनुरूप व्यक्तित्व सम्बन्धी विभिन्न मान्यताओं की रचना की तथा उसी के अनुरूप व्यक्तित्व के सैद्धान्तिक सन्दर्भ व आधार का निर्माण करके मानव व्यवहार को स्पष्ट करने का प्रयास किया।

व्यक्तित्व के कुछ सिद्धान्त निम्नांकित हैं–

1. मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (Psycho-Analytical Theory)
2. शरीर रचना सिद्धान्त (Constitutional Theory)
3. विषेशक / शीलगुण सिद्धान्त (Trait Theory)
4. माँग सिद्धान्त (Need Theory)

1. मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (Psycho-Analytical Theory)

(i) फ्रायड का व्यक्तित्व सिद्धान्त (Freud's Personality Theory)

व्यक्तित्व के प्रथम व्यापक सिद्धान्त की रचना करने का श्रेय सिगमंड फ्रायड (Singmond Freud) को दिया जाता है। फ्रायड के इस सिद्धान्त को ''फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त' के नाम से जाना जाता है। फ्रायड ही वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सर्वप्रथम बाल्यावस्था के अनुभवों को वयस्क के व्यवहार और चैतन्यता का आधार बताया। उन्होंने मन को तीन भागों में बाँटा– चेतन, अचेतन और अर्द्ध–चेतन।

फ्रायड के इस सिद्धान्त में व्यक्तित्व के सम्बन्ध में दो तथ्य प्रमुख रूप से सामने आते हैं–

(1) व्यक्तित्व संरचना (Structure of Personality)

(2) व्यक्तित्व का विकास (Development of Personality)

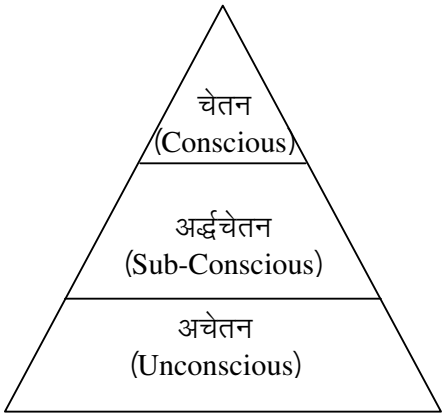

चेतन, अर्द्धचेतन तथा अचेतन का आकारीय निरूपण

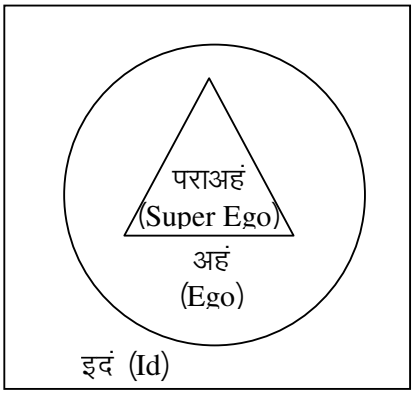

इदं, अहं तथा पराअहं का आकारीय निरूपण

(ii) एरिक्सन का व्यक्तित्व सिद्धान्त (Erikson's Theory of Personality)

एरिक्सन नव–फ्रायडवादी विचारकों में से एक है। इनका सिद्धान्त सर्वाधिक प्रभावपूर्ण और व्यवस्थित है। एरिक्सन ने अपनी कृति 'Childhood & Society' में अपने इस सिद्धान्त का वर्णन किया है। उनका मानना था व्यक्तित्व का विकास जीवन पर्यन्त चलता रहता है। एरिक्सन व्यक्तित्व के विकास के सिद्धान्त को पश्वजनक सिद्धान्त (Epigentic Principle) पर केन्द्रित करते हैं।

एरिक्सन ने व्यक्तित्व विकास की आठ अवस्थाओं का वर्णन मनोसामाजिक आधार पर किया है–

1. विश्वास विपरीत अविश्वास (जन्म से एक वर्ष तक)
2. स्वाधीनता विपरीत शर्म तथा शंका (दूसरे वर्ष तक)
3. पहल विपरीत दोष (तीसरे से पाँचवें वर्ष तक)
4. परिश्रम विपरीत हीनता (छह से ग्यारह वर्ष तक)
5. अभिज्ञान विपरीत भूमिका दुविधा (बारह से अठारह वर्ष तक)
6. घनिष्ठता विपरीत अकेलापन (युवा पौढ़)
7. उत्पादकता विपरीत ठहराव (मध्य प्रौढ़)
8. सनिष्ठा विपरीत नैराश्य (बुढ़ापा)

2. शरीर रचना सिद्धान्त (Constitutional Theory)

(iii) शैल्डन का व्यक्तित्व सिद्धान्त (Sheldon's Personality Theory)

जीव विज्ञान की पृष्ठभूमि वाले मनोवैज्ञानिकों ने शारीरिक गठन व शरीर रचना के आधार पर व्यक्तित्व की व्याख्या करने का प्रयास किया। इस प्रकार की विचारधारा का प्रमुख प्रवर्तक शैल्डन (W.H. Sheldon) था। उसने शरीर रचना तथा व्यक्तित्व के बीच सम्बन्ध पर खूब अध्ययन किया। उनके द्वारा शारीरिक गठन के आधार पर व्यक्तित्व को तीन भागों में विभक्त किया–

(1) गोलाकृति (Endomorphy)	व्यक्ति भोजन प्रिय, आराम पसन्द, परम्परावादी, सहनशील, सामाजिक, हंसमुख प्रकृति के होते हैं।
(2) आयताकृति (Mesomorphy)	रोमांचप्रिय, प्रभुत्ववादी, जोशीले, उद्देश्य केन्द्रित तथा क्रोधित प्रकृति के होते हैं।
(3) लम्बाकृति (Ectomorphy)	व्यक्ति प्रायः गुमसुम, एकान्तप्रिय, अल्पनिद्रा वाले, एकाकी, जल्दी थक जाने वाले तथा निष्ठुर प्रकृति के होते हैं।

3. शीलगुण/विशेषक सिद्धान्त (Trait Theory)

(iv) जी0डब्ल्यू0 आलपोर्ट (G.W. Allport)

आलपोर्ट का व्यक्तित्व के शीलगुण सिद्धान्त के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने शीलगुण को दो भागों में बाँटा है–

(1) सामान्य शीलगुण (Common Trait)

(2) व्यक्तिगत शीलगुण (Personal Trait)

आलपोर्ट ने सामान्य शीलगुण की अपेक्षा, व्यक्तिगत शीलगुणों के अध्ययन पर अधिक जोर दिया तथा व्यक्तित्व शीलगुणों की तीन प्रवृत्तियों को देखा–

(क) प्रमुख प्रवृत्ति (Cardinal Disposition)

(ख) केन्द्रीय प्रवृत्ति (Central Disposition)

(ग) गौण प्रवृत्ति (Secondary Disposition)

आलपोर्ट के अनुसार व्यक्तित्व जन्मजात न होकर परिस्थितियों से प्रभावित होकर विकसित होता है। सकारात्मक परिस्थितियों में ही स्वस्थ व्यक्तित्व का विकास हो पाता है। जबकि विषम परिस्थितियों में पहले बालकों के व्यक्तित्व में नकारात्मक शीलगुण अधिक प्रभावी हो जाते हैं।

(v) कैटिल का व्यक्तित्व सिद्धान्त (Cattle's Theory of Personality)

व्यक्ति के व्यवहार से सम्बन्धित मौलिक लक्षणों का पृथककरण कैटिल ने अपने प्रयोगशालीय अध्ययनों, व्यक्तित्व अनुसूचियों और व्यवहार निरीक्षणों के आधार पर किया। कैटिल ने लगभग 4000 शीलगुण शब्दों की सूची से 171 दुर्लभविशेषताओं को चयनित किया।

कैटल ने कारक विश्लेषण (Factor Analysis) नाम की सांख्यिकीय प्रविधि का उपयोग करके व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करने वाले 12 मूलभूत कारकों को ज्ञात किया तथा इन्हें व्यक्तित्व शीलगुण (Personality Traits) के नाम से सम्बोधित किया।

कैटिल ने सभी लक्षणों के मुख्य दो प्रकार बताये हैं–

(क) स्रोत लक्षण (Source Traits)

(ख) सतह लक्षण (Surface Traits)

सतही शीलगुण व्यक्ति के द्वारा अभिव्यक्त किये जा रहे व्यवहार से परिलक्षित होते हैं तथा व्यक्ति के व्यवहार को प्रत्यक्षतः प्रभावित करते हैं। इसके विपरीत स्रोत शीलगुण व्यक्ति के व्यवहार के पीछे छिपे रहते हैं तथा अभिव्यक्त को अप्रत्यक्षरूप से नियंत्रित व निर्धारित करते हैं। स्पष्टतः स्रोत शीलगुणों का महत्त्व सतही शीलगुणों से अधिक होता है। स्रोत शीलगुण का एक उदाहरण **मित्रता** है।

(vi) आइजनेक का व्यक्तित्व सिद्धान्त (Eysenck's Theory of Personality)

जर्मनी से आकर ब्रिटेन में बसे एच0जे0 आइजेंक (H.J. Eysenck) नामक मनोवैज्ञानिक ने व्यक्तित्व को ''प्रकार–शीलगुण प्रत्यय'' (Trype-Traits Concept) के रूप में प्रस्तुत किया।

आइजेंक के अनुसार व्यवहार संगठन के निम्न चार स्तर होते हैं–

(i) विशिष्ट अनुक्रियाएँ (Specific Responses)

(ii) आदतजन्य अनुक्रियाएँ (Habitual Responses)

(iii) शीलगुण (Traits)

(iv) प्रकार (Types)

विशिष्ट अनुक्रियाएँ	पलक झपकाना, आँखें झुकाना आदि।
आदतजन्य अनुक्रियाएँ	शीघ्रता से मित्र बनाना या न बनाना आदि।
शीलगुण	कुछ आदत जन्य अनुक्रियाओं के एकीकृत होने पर शीलगुण बनते हैं। संकोच (Shyness) शीलगुण की सूचक है।
प्रकार	अनेक शीलगुणों के एकीकृत रूप को आइजेंक ने प्रकार कहा है। जैसे– आग्रह, दृढ़ता, आत्मनिष्ठता...

4. माँग सिद्धान्त (Need Theory)

(vii) मैसलो का व्यक्तित्व सिद्धान्त (Maslow's Personality Theory)

मैसलो नामक मनोवैज्ञानिक ने व्यक्तित्व माँगों के सम्बन्ध में विशेष कार्य किया है। मैसलों को मानवतावादी मनोविज्ञान का आध्यात्मिक जनक (Spiritual Father) कहा जाता है। इन्होंने मानव मूल्यों (Human Values) व्यक्तिगत वर्धन (Personal Growth) तथा आत्म–निर्देश (Self-Direction) पर विशेष बल दिया एवं कहा कि व्यक्तित्व विकास व्यक्ति के अन्दर उपस्थित अभिप्रेरकों (Motives) के द्वारा संगठित ढंग से होता है। मैसलों का विचार था कि मानव अभिप्रेरक (Human Motion) जन्मजात होते हैं एवं इन्हें वरीयता (Priority) के आधार पर आरोही पदानुक्रम (Ascending Hierarchy) के रूप में व्यवस्थित किया जा सकता है। इसमें अभिप्रेरकों के पाँच वर्गों में बाँटकर निम्नवत पदानुक्रम प्रस्तुत किया–

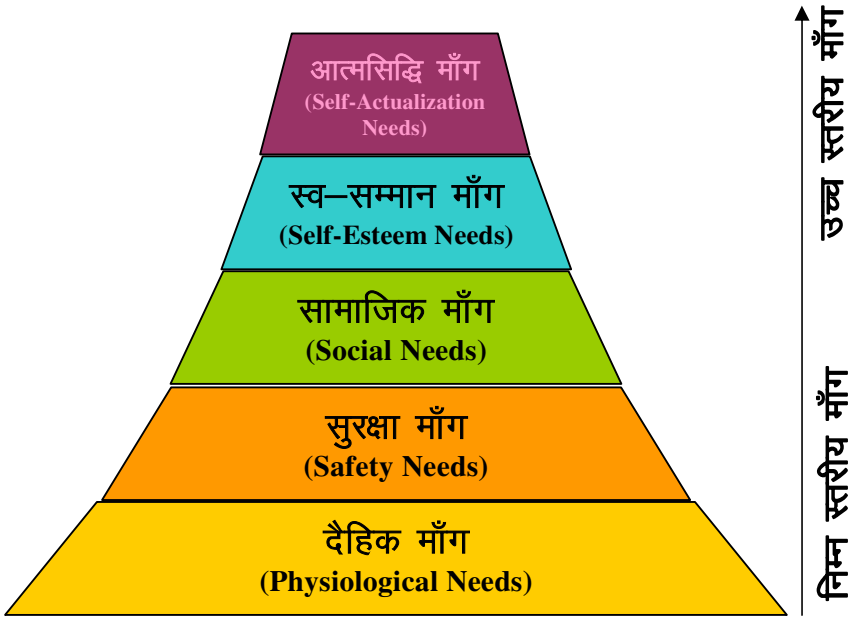

मैसलों के माँग सिद्धान्त का पदानुक्रमित निदर्श)

(viii) रोजर्स का व्यक्तित्व सिद्धान्त (Roger's Personality Theory)

रोजर्स (Roger) का सिद्धान्त मानव की सकारात्मक प्रकृति की अवधारणा पर आधारित है। रोजर्स का व्यक्तित्व का सिद्धान्त उनके मनोचिकित्सक के अनुभवों से विकसित हुआ है। इस सिद्धान्त के मुख्य प्रत्ययात्मक अवयव निम्नलिखित हैं–

1. प्राणी जो पूर्ण व्यक्ति है।
2. घटना सम्बन्धी क्षेत्र जो अनुभव का योग है।
3. स्व जो घटना सम्बन्धी क्षेत्र का भेदीकृत भाग हैं एवं चेतन प्रत्यक्षों के प्रतिरूप एवं स्वयं के मूल्यों द्वारा निर्मित होता है। इनके सिद्धान्त में निम्नलिखित विशेषताएँ पायी जाती है–

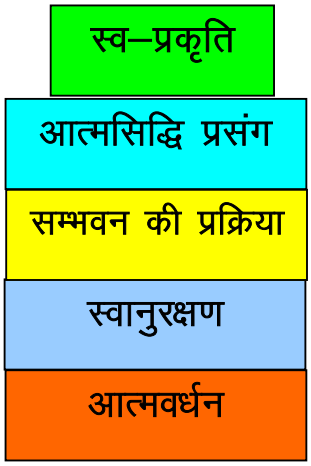

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता एस0पी0 ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण (2001)
2. हेनरी ई गैरिट एवं वुडवर्थ आर0एस0 शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी संस्करण–1993, कल्याण पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
3. शर्मा आर0ए0 'अध्यापक शिक्षा' इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ (2001)